सञ्जय उवाच।
एवमुक्तो हृषीकेशो गुडाकेशेन भारत।
सेनयोरुभयोर्मध्ये स्थापयित्वा रथोत्तमम्।।२४।।

सञ्जयः उवाच=सञ्जय ने कहा, **एवम्**=इस प्रकार; **उक्तः**=कहे हुए; **हृषीकेशः**=भगवान् श्रीकृष्ण ने; **गुडाकेशेन**=अर्जुन द्वारा; **भारत**=हे भरतवंशी; **सेनयोः**=सेनाओं के; **उभयोः**=दोनों; **मध्ये**=मध्य में; **स्थापयित्वा**=खड़ा करके; **रथोत्तमम्**=उस उत्तम रथ को।

अनुवाद

संजय ने कहा, हे भरतवंशी धृतराष्ट्र ! अर्जुन द्वारा इस प्रकार सम्बोधित किए जाने पर भगवान् श्रीकृष्ण ने उस उत्तम रथ को दोनों सेनाओं के मध्य में स्थापित कर दिया।।२४।।

तात्पर्य

इस श्लोक में अर्जुन को **गुडाकेश** कहा गया है। 'गुडाका' का सामान्य अर्थ निद्रा है। अतएव निद्राविजयी को 'गुडाकेश' कहते हैं। निद्रा का अर्थ अज्ञान भी है। श्रीकृष्ण से अर्जुन का सख्यभाव था। इसके परिणामस्वरूप उसको अज्ञान तथा निद्रा, दोनों पर विजय प्राप्त हुई। भक्त के स्वभाव के अनुरूप अर्जुन को क्षणमात्र के लिए भी श्रीकृष्ण का विस्मरण नहीं होता था। भगवद्भक्त जागृत अथवा सुप्त—किसी भी अवस्था में भगवान् श्रीकृष्ण के नाम, लीला एवं गुणादि के चिन्तन से विमुख नहीं होता, क्योंकि यह उसके लिए सर्वथा असह्य है। श्रीकृष्ण के निरन्तर चिन्तन के प्रभाव से निद्रा और अज्ञान—इन दोनों पर पूर्णरूप से विजय प्राप्त कर सकता है। श्रीकृष्ण की सतत स्मृति को ही कृष्णभावनामृत अथवा समाधि कहते हैं। हृषीकेश अर्थात् जीवमात्र के मन एवं इन्द्रियों के स्वामी भगवान् श्रीकृष्ण दोनों सेनाओं के मध्य रथ स्थापन कराने में अर्जुन के अभिप्राय को जानते थे। अतएव उन्होंने ऐसा ही किया और फिर ये वचन कहे।

भीष्मद्रोणप्रमुखतः सर्वेषां च महीक्षिताम्।
उवाच पार्थ पश्यैतान्समवेतान्कुरूनिति।।२५।।

भीष्म=भीष्म पितामह; **द्रोण**=द्रोणाचार्य के; **प्रमुखतः**=सामने; **सर्वेषाम्**=सब; **च**=तथा; **महीक्षिताम्**=विश्व के नरपतियों के; **उवाच**=कहा; **पार्थ**=हे अर्जुन; **पश्य**=देख; **एतान्**=इन; **समवेतान्**=एकत्र हुए; **कुरून्**=कौरवों को; **इति**=इस प्रकार।

अनुवाद

भीष्म, द्रोण और विश्व के अन्य सभी राजाओं के सामने भगवान् हृषीकेश ने कहा कि हे पार्थ ! यहाँ एकत्रित हुए इन सब कौरवों को देख।।२५।।